वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 8 | शुक्रवार 5 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

गुरुवार को मौसम ने पलटी मारी और गुलाबी नगरी के आसमां में काले बादल छा गए जिससे गर्मी से बेहद राहत मिली।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से विधायकों ने की मुलाकात

विकास कार्यों एवं परियोजनाओं की प्रगति पर की चर्चा

जयपुर. शाबाश इंडिया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से गुरुवार को मुख्यमंत्री निवास पर विधायक पुष्पेन्द्र सिंह, शत्रुघन गौतम, लक्ष्मण राम कलरू एवं छगन सिंह राजपुरोहित ने मुलाकात की। इस दौरान विकास से जुड़े विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की प्रगति एवं जनभागीदारी से हरियालो राजस्थान अभियान को सफल बनाने पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से क्षेत्रीय विकास कार्यों, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार और जनहित से जुड़े विषयों पर बातचीत की। वहीं, जनप्रतिनिधियों ने विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

सेल्फी से ज्यादा सेवा

पेड़ लगाएं
पेड़ बचाएं
धरती को
हराभरा बनाएं

पेड़ लगाना ही नहीं, रखना भी है ध्यान।
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

पाँच जून के दिन सभी, लें ऐसा संकल्प।
सूंखे पौधों को मिले, जीवन का फिर विकल्प।।
सेवा का संदेश हो, होता तब कल्याण–
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

रोपे थे जो वर्ष भर, खड़े वहीं लाचार।
पानी बिन मुरझा रहे, कैसे हों साकार।।
पहले उनको सींचिए, फिर करना गुणगान–
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

सेल्फी लेकर क्या मिला, यदि पौधों में टूट।
धरती माँ की गोद से, हरियाली ले लूट।।
कर्मो से पहचान हो, नहीं दिखावा-ज्ञान–
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

छाया, फल और प्राण का, देते जो उपहार।
उनके प्रति भी चाहिए, अपना कुछ उपकार।।
पेड़ों से ही जीवित है, धरती का सम्मान–
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

'प्रियंका' यही वृक्ष ही, जीवन का आधार।
इनसे ही खुशहाल है, प्रकृति का संसार।।
पाँच जून पर लीजिए, बस इतना अरमान–
जल देकर जीवन मिले, छेड़ो ये अभियान।।

– डॉ. प्रियंका सौरभ

5 जून
विश्व
पर्यावरण दिवस

आओ मिलकर करें बीड़ा – हर पौधा बनेगा हीरा

पेड़ लगाएं | पानी दें | पर्यावरण बचाएं | धरती को हरा-भरा बनाएं

सत्य ही असत्य का ज्ञान कराता है: विशुद्ध सागर महाराज

सोनल जैन की रिपोर्ट

भिंड। आदिनाथ दिगंबर जैन कुआं वाले जैन मंदिर में 5 से 10 जून तक आयोजित होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए नगर में पधारे पट्टाचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज ने निराला रंग विहार में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सत्य ही असत्य का ज्ञान कराता है। सत्य का जीवन अलौकिक एवं आनंदमय होता है। उन्होंने कहा कि सत्य अनंत-अनंत रूपों में विद्यमान है। जितनी भी पर्यायें (शरीर) हैं, उनमें द्रव्य रूप से अनंत सिद्ध परमात्मा विराजमान हैं और वही सत्य हैं। वाणी का सत्य, प्राणी का सत्य, मन का सत्य तथा भावों का सत्य सदैव विद्यमान रहता है। व्यक्ति झूठ बोलते समय भी सत्य का अस्तित्व समाप्त नहीं कर सकता। आज भगवान ऋषभदेव और भगवान राम प्रत्यक्ष रूप में हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका अस्तित्व था, इसलिए उनका नाम और इतिहास आज भी सत्य के रूप में विद्यमान है। वस्तु वस्तु है और सत्य सत्य है। पट्टाचार्य विशुद्ध सागर महाराज ने कहा कि शरीर को वस्त्रों की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वासना को वस्त्रों की आवश्यकता होती है। यदि वस्त्र आवश्यक होते तो निर्ग्रन्थ मुनि भी वस्त्र धारण करते। प्रकृति में अनेक जीव-जंतु और पक्षी भी बिना वस्त्रों के जीवन व्यतीत करते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य की अधिकांश आवश्यकताएं कृत्रिम हैं। महाराज श्री ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार प्रतिदिन मंदिर जाते हो, उसी प्रकार कभी-कभी श्मशान घाट भी जाया करो। वहां जीवन की वास्तविकता का बोध होता है। उन्होंने कहा कि वस्तु का मिलना पुण्य का उदय है, वस्तु का भोगना पाप का बंध है और वस्तु का त्याग करना तपस्या है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ आज, निकलेगी कलश घटयात्रा

भिंड। पट्टाचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के सान्निध्य में 5 से 10 जून तक आयोजित होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ गुरुवार को भव्य कलश घटयात्रा के साथ होगा। प्रेस को जारी विज्ञप्ति में पार्षद मनोज जैन ने बताया कि प्रातः 6:30 बजे पेच नंबर-2 स्थित कुआं वाले जैन मंदिर से कलश घटयात्रा प्रारंभ होगी। यात्रा में महिलाएं सिर पर कलश धारण कर शामिल होंगी। यह यात्रा इटावा रोड, जिला पंचायत वाली गली, देव नगर कॉलोनी एवं महावीर गंज मार्ग से होते हुए

निराला रंग विहार में निर्मित अयोध्या नगरी पहुंचेगी। यात्रा के समापन पर मंडप शुद्धि, ध्वजारोहण एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाएगा। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह का वातावरण है तथा आयोजन स्थल को भव्य रूप से सजाया गया है।

सीपीआर एवं बेसिक लाइफ सपोर्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम

मुनिश्री की अगवानी के लिए अशोकनगर जैन समाज पहुंचा गुना

हम कहें कि धर्म के साथ मुझे देश बहुत अच्छा मिला, यह मेरा सौभाग्य है : मुनिपुंगव सुधासागर महाराज

भव्य एवं ऐतिहासिक अगवानी में उमड़ा जनसैलाब, अशोकनगर जैन समाज ने विहार में बढ़-चढ़कर लिया भाग : विजय धुर्रा

अशोकनगर. शाबाश इंडिया। नगर से विहार करते हुए राष्ट्रसंत मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ 18 पिच्छिकाओं के साथ गुना पहुंचे, जहां उनका भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर अशोकनगर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु गुना पहुंचे और परम पूज्य गुरुदेव की अगवानी में पलक-पांवड़े बिछाए। जैन युवा वर्ग सहित सैकड़ों भक्तों ने मंगल विहार में सहभागिता निभाई। जैन समाज अशोकनगर के मंत्री विजय धुर्रा ने गुना से लौटकर बताया कि समाज अध्यक्ष राकेश कंसल, महामंत्री राकेश अमरोद, संजीव भारिल्य, पंचकल्याणक महोत्सव के पात्र धनकुबेर शैलेन्द्र दद्दा, चक्रवर्ती संजीव श्रागर, विनोद मोदी, युवा वर्ग अध्यक्ष सुलभ अखाई, राहुल सिघई, सुनील घेलू सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पदप्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि अशोकनगर से लगातार जैन युवा वर्ग के कार्यकर्ताओं एवं सैकड़ों श्रद्धालुओं ने गुना तक मंगल विहार का लाभ लिया तथा आयोजन को ऐतिहासिक बनाने में सक्रिय सहभागिता निभाई।

पंचकल्याणक भले भगवान का हो, कल्याण हमारा ही होगा

इस अवसर पर मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पंचकल्याणक भले ही भगवान का होता है, लेकिन उससे कल्याण हमारा ही होता है। उन्होंने कहा कि भगवान के गर्भ में आने के छह माह पूर्व से ही देवों द्वारा प्रतिदिन तीनों काल में साढ़े दस करोड़ रत्नों की वर्षा होने लगती है। मुनिश्री ने कहा कि जीवन में किसी के अभिशाप से भयभीत नहीं होना चाहिए, लेकिन ऐसा आचरण अवश्य करना चाहिए कि अपने ही परिवार और संतान के लिए कष्ट का कारण न बनें। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को राष्ट्र और धर्म के प्रति सदैव समर्पित रहना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में देशद्रोह का भाव मन में नहीं लाना चाहिए। उन्होंने कहा कि साधना, स्वाध्याय और पाठ का प्रभाव अवश्य दिखाई देता है। हमारे भाव और परिणाम ही जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं। यदि भाव शुद्ध हों तो उनका सकारात्मक प्रभाव स्वयं अनुभव किया जा सकता है।

डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रज्ञा मेहता की आधिकारिक यात्रा ने बढ़ाई रणथंभौर प्रवास की गरिमा

''सेवा की राह पर जो कदम बढ़ाते हैं,
वही समाज में नई मिसाल बनाते हैं।
मित्रता, संस्कार और समर्पण का संग लेकर,
रोटरी के सिपाही हर दिल में स्थान बनाते हैं।''

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ द्वारा रणथंभौर की मनमोहक वादियों में आयोजित पारिवारिक प्रवास उस समय और अधिक गौरवशाली एवं यादगार बन गया, जब रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटेरियन प्रज्ञा मेहता ने अपनी आधिकारिक यात्रा से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनकी गरिमामयी उपस्थिति ने पूरे आयोजन में नई ऊर्जा, प्रेरणा और उत्साह का संचार किया। इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रज्ञा मेहता ने क्लब द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा विभिन्न जनकल्याणकारी परियोजनाओं के माध्यम से किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ वास्तव में ''सर्विस एबव सेल्फ'' के आदर्श को सार्थक रूप से चरितार्थ कर रहा है।

फेलोशिप, परिवार और मित्रता का अद्भुत संगम

रणथंभौर प्रवास केवल एक पर्यटन कार्यक्रम नहीं, बल्कि रोटरी परिवार की एकता, आत्मीयता और फेलोशिप का जीवंत उत्सव बन गया। पूल साइड पार्टी, सांस्कृतिक संध्या, संगीत, नृत्य और विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों ने सभी सदस्यों एवं उनके परिवारजनों को आनंद और उत्साह से भर दिया। कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि चार नए सदस्यों ने रोटरी परिवार से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने रोटरी के सेवा कार्यों, फेलोशिप और समाज के प्रति समर्पण की भावना से प्रभावित होकर सदस्यता ग्रहण करने का निर्णय लिया। यह क्लब की बढ़ती प्रतिष्ठा और प्रभावी सेवा गतिविधियों का प्रमाण है।

प्रकृति, रोमांच और आस्था का अनूठा अनुभव

रणथंभौर सफारी के दौरान सदस्यों ने प्रकृति की अनुपम सुंदरता, वन्यजीवों की दुर्लभ झलकियों और रोमांचक अनुभवों का आनंद लिया। वहीं त्रिनेत्र गणेश मंदिर में दर्शन कर सभी ने समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा के कार्यों में निरंतर सफलता, शांति और समृद्धि की कामना की।

प्रेरणादायी उद्बोधन

अपने संबोधन में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रज्ञा मेहता ने कहा कि रोटरी केवल एक संगठन नहीं, बल्कि सेवा, नेतृत्व, संस्कार और मानवता का सशक्त अभियान है। उन्होंने क्लब की सक्रियता, संगठन क्षमता, पारिवारिक वातावरण और सेवा परियोजनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

आभार एवं अभिनंदन

इस सफल आयोजन को यादगार बनाने में सभी रोटेरियन्स, उनके परिवारजनों, कार्यक्रम संयोजकों, समन्वयकों एवं सहयोगी सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभी के सामूहिक प्रयास, समर्पण और सहयोग से यह प्रवास एक अविस्मरणीय अनुभव बन सका।

जहाँ सेवा हो उद्देश्य, जहाँ मित्रता हो सम्मान
वहीं रोटरी बनती है समाज की सच्ची पहचान।
मिले हैं हम एक परिवार बनकर, यही हमारी शान है,
रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ सेवा, संस्कार और समर्पण की मिसाल है।

चलो दीप से दीप जलाते हैं,
सेवा का नया इतिहास बनाते हैं।
रोटरी के आदर्शों को अपनाकर,
मानवता का मान बढ़ाते हैं।

रणथंभौर की सुरम्य वादियों में सेवा, मित्रता, फेलोशिप और पारिवारिक मूल्यों का यह संगम सभी रोटेरियन्स के लिए प्रेरणा, आनंद और आत्मीयता का अनुपम अनुभव बन गया। यह प्रवास केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि रोटरी परिवार की एकता, अपनत्व और सेवा भावना का भव्य उत्सव बनकर सभी की स्मृतियों में लंबे समय तक जीवंत रहेगा।

संतों की संगति से करोड़ों भवों के पाप कटते हैं: आर्यिका विज्ञाश्री

पुरानी टोंक जैन समाज ने गुरु मां को श्रीफल अर्पित कर लिया आशीर्वाद

पुरानी टोंक में कुछ दिन प्रवास करने का किया निवेदन

टोंक. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, आदर्श नगर टोंक में प्रातःकाल आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने नित्य नियम पूजा कर भगवान पार्श्वनाथ को अर्घ्य एवं श्रीफल समर्पित किए। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि गुरु मां की दैनिक चर्या में मौन साधना, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, सामायिक, मंत्र साधना एवं उपवास जैसे विविध तपों का समावेश है। प्रातःकालीन देव वंदना एवं सहस्त्रनाम भक्ति के रसास्वादन से उनके दिन की शुरूआत होती है। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा कि भक्ति रूपी सोपान ही मुक्ति रूपी मंजिल तक पहुंचाता है। गुरु भक्ति से अज्ञानी भी ज्ञानी बन जाता है और पामर भी परमात्मा बनने की दिशा में अग्रसर हो जाता है। उन्होंने कहा कि जैसे पानी की एक बूंद का सामान्यतः कोई विशेष मूल्य नहीं होता, लेकिन जब वह सीप के संपर्क में आती है तो मोती बनकर अनमोल हो जाती है। उसी प्रकार संसार में भटकता हुआ जीव जब गुरु की शरण स्वीकार करता है, तब गुरु के उपकार उसके जीवन और आत्मा को मोती के समान मूल्यवान बना देते हैं। उन्होंने कहा कि जैसे हाथी के पैर के नीचे आने पर टमाटर चकनाचूर हो जाता है, उसी प्रकार संतों के उपदेश और वचनों के प्रभाव से हमारे पाप कर्म नष्ट होने लगते हैं। संतों की संगति से करोड़ों भवों के पाप कटते हैं और आत्मा के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। आर्यिका श्री ने कहा कि जिस प्रकार छाता वर्षा को नहीं रोकता, लेकिन वर्षा में चलने का साहस प्रदान करता है, उसी प्रकार संत कर्मों को रोक नहीं सकते, परंतु उनसे संघर्ष करने की शक्ति और हौसला अवश्य प्रदान करते हैं। गुरु की कृपा दृष्टि जिस पर पड़ जाए, उसका जीवन धन्य हो जाता है। गुरु के आशीर्वाद से शिष्य की संकल्प शक्ति मजबूत होती है और उसी संकल्प के बल पर वह सफलता के शिखर तक पहुंचता है। राकेश जैन बिलासपुरिया ने बताया कि सकल पुरानी टोंक जैन समाज के श्रद्धालुओं ने प्रवचन के दौरान आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही समाज के प्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से आर्यिका श्री से पुरानी टोंक में कुछ दिन प्रवास करने का निवेदन किया। श्रद्धालुओं ने आग्रह किया कि गुरु मां अपने प्रवास के दौरान स्वाध्याय, प्रवचन एवं शास्त्र सभाओं के माध्यम से पुरानी टोंक क्षेत्र के लोगों को धर्म लाभ एवं ज्ञानार्जन का अवसर प्रदान करें।

राजनीति

प्रकृति से संगति, भविष्य से दोस्ती

सुनील कुमार महला

पृथ्वी हमारा एकमात्र घर है और इसका संरक्षण किसी एक व्यक्ति, संस्था या देश की नहीं, बल्कि समूची मानवता की साझा जिम्मेदारी है। यही संदेश प्रतिवर्ष 5 जून को मनाया जाने वाला विश्व पर्यावरण दिवस देता है। बढ़ता प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का संकट आज मानव अस्तित्व के सामने गंभीर चुनौती बन चुके हैं। ऐसे में यह दिवस केवल जागरूकता का अवसर नहीं, बल्कि सामूहिक उत्तरदायित्व का स्मरण भी है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा प्रत्येक वर्ष इस दिवस के लिए विशेष थीम निर्धारित की जाती है। वर्ष 2026 की थीम ''प्रकृति से प्रेरित। जलवायु के लिए। हमारे भविष्य के लिए।'' रखी गई है। इसके साथ चलाया जा रहा अभियान नाऊ फोर क्लाइमेट जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई का संदेश देता है। विश्व पर्यावरण दिवस की शुरूआत 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद हुई थी और पहली बार इसे 5 जून 1973 को केवल एक पृथ्वी के संदेश के साथ मनाया गया था। आज इस दिवस का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि पृथ्वी का औसत तापमान खतरनाक स्तर के करीब पहुंच रहा है। ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, मौसम चक्र असंतुलित हो रहा है और प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति बढ़ रही है। यही कारण है कि 150 से अधिक देशों में करोड़ों लोग पर्यावरण संरक्षण के अभियानों से जुड़ रहे हैं। ग्रीन हाइड्रोजन, स्वच्छ ऊर्जा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सतत विकास जैसे विषय वैश्विक चर्चा के केंद्र में हैं। भारत भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनेक प्रयास कर रहा है। पौधारोपण अभियान, सिंगल-यूज प्लास्टिक पर नियंत्रण तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने जैसे कदम सकारात्मक संकेत हैं। लेकिन इसके बावजूद एक कड़वी सच्चाई यह है कि हमारा पर्यावरण प्रेम अक्सर एक दिन के आयोजन तक सीमित रह जाता है। सेमिनारों, भाषणों और सोशल मीडिया पोस्टों के बीच वास्तविक कार्रवाई कहीं पीछे छूट जाती है। पौधे लगाए जाते हैं, तस्वीरें खिंचवाई जाती हैं, लेकिन उनकी देखभाल की जिम्मेदारी शायद ही कोई निभाता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है।

संपादकीय

लापरवाही की आग और जानों का नुकसान

राजधानी दिल्ली के मालवीय नगर स्थित हौजरानी इलाके में फ्लोरिश स्टे बेड एंड ब्रेकफास्ट होटल (कुछ रिपोर्टों में मिकासा इन) में लगी भीषण आग ने पूरे देश को झकझोर दिया है। इस दर्दनाक हादसे में 21 लोगों की मौत हो गई, जबकि 40 से अधिक लोगों को सुरक्षित निकाला गया। मृतकों में कई विदेशी नागरिक भी शामिल बताए जा रहे हैं। हाल के वर्षों में दिल्ली में हुआ यह सबसे भयावह अग्निकांड माना जा रहा है। जानकारी

के अनुसार सुबह करीब 8:50 बजे होटल के बेसमेंट में स्थित रेस्तरां से आग लगनी शुरू हुई। देखते ही देखते आग ने पूरी इमारत को अपनी चपेट में ले लिया। संकरी गलियों और सीमित पहुंच मार्गों के कारण दमकल कर्मियों को राहत एवं बचाव कार्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई लोगों को अपनी जान बचाने के लिए खिड़कियों से कूदना पड़ा। सोशल मीडिया पर सामने आए कुछ वीडियो इस त्रासदी की भयावहता को बयां करते हैं। प्रारंभिक जांच में कई गंभीर लापरवाहियां सामने आई हैं। बताया जा रहा है कि होटल को केवल छह कमरों के संचालन की अनुमति थी, जबकि वहां लगभग 25 कमरे संचालित किए जा रहे थे। फायर एनओसी का अभाव, पर्याप्त अग्निशमन उपकरणों की कमी और सुरक्षित निकासी मार्गों का न होना हादसे की गंभीरता को और बढ़ाता है। पुलिस ने होटल मालिक को गिरफ्तार कर लिया है तथा अवैध निर्माण और सुरक्षा मानकों की अनदेखी के आरोपों की जांच जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2 लाख रुपये तथा घायलों को 50,000 रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है। यह केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही और प्रशासनिक विफलता का परिणाम प्रतीत होती है। दिल्ली सहित देश के अनेक शहरों में फायर सेफ्टी नियमों को अक्सर औपचारिकता समझ लिया जाता है। होटलों, गेस्ट हाउसों और व्यावसायिक भवनों में सुरक्षा मानकों की अनदेखी लगातार बड़े हादसों को जन्म दे रही है। बेसमेंट में संचालित रेस्तरां और रसोई क्षेत्र पहले से ही संवेदनशील माने जाते हैं। ऐसे में यदि भवन में फायर एस्केप, स्प्रिंकलर सिस्टम और वैकल्पिक निकासी मार्ग न हों तो छोटी सी चिंगारी भी विनाशकारी रूप ले सकती है। मालवीय नगर क्षेत्र छात्रों, नौकरीपेशा युवाओं और चिकित्सा उपचार के लिए आने वाले लोगों का प्रमुख केंद्र है। आसपास स्थित अस्पतालों के कारण यहां बड़ी संख्या में बाहरी और विदेशी नागरिक भी ठहरते हैं। ऐसे में इस घटना ने न केवल कई परिवारों को गहरा आघात पहुंचाया है, बल्कि भारत की सुरक्षा व्यवस्था और मेडिकल टूरिज्म की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े किए हैं। सबसे बड़ा प्रश्न प्रशासनिक जवाबदेही का है। यदि भवन के पास आवश्यक अनुमति और सुरक्षा प्रमाणपत्र नहीं थे, तो वह वर्षों तक संचालित कैसे होता रहा? नियमित निरीक्षण, निगरानी और कार्रवाई की व्यवस्था आखिर कहां थी? इन सवालों के जवाब तलाशना आवश्यक है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

'कोकरोच आंदोलन' और समाधान?

सौरभ वार्ष्णेय

हाल ही में 'कोकरोच जनता पार्टी' नामक डिजिटल अभियान और उसके संस्थापक अभिजीत दीपके की चर्चा देशभर में तेज हो गई है। यह आंदोलन बेरोजगारी, युवाओं की उपेक्षा और राजनीतिक असंतोष जैसे मुद्दों को लेकर सोशल मीडिया पर उभरा है। अब दीपके के 6 जून को भारत आने और जंतर-मंतर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने की घोषणा ने राजनीतिक गलियारों में हलचल पैदा कर दी है। प्रश्न यह है कि क्या इस आंदोलन से परीक्षा में हुई धांधलियों और पेपर लीक जैसी गंभीर समस्याओं का कोई स्थायी समाधान निकलेगा? वर्तमान में सरकार भी 6 जून की तारीख को लेकर सतर्क है। भारत का राजनीतिक इतिहास गवाह है कि कई बार बड़े आंदोलनों ने सत्ता की नींव हिला दी है, लेकिन यह भी सच है कि डिजिटल लोकप्रियता और वास्तविक जनाधार में एक बड़ा अंतर होता है। अनेक डिजिटल अभियान सोशल मीडिया पर चमक तो बिखेरते हैं, पर जमीनी संगठन में तब्दील न हो पाने के कारण समय के साथ ओझल हो जाते हैं। किसी भी आंदोलन में नेतृत्व की भौतिक उपस्थिति कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाती है और मीडिया का ध्यान आकर्षित करती है। दीपके का भारत आगमन समर्थकों में उत्साह भर सकता है, लेकिन आंदोलन की सफलता केवल एक नेता के आने पर निर्भर नहीं होती। इसकी सार्थकता इसके स्पष्ट उद्देश्यों, जनसमर्थन और वैचारिक गहराई में निहित है। यदि यह अभियान गांवों, विश्वविद्यालयों और रोजगार से जुड़े मंचों तक अपनी पैठ बनाता है, तभी इसे वास्तविक मजबूती मिलेगी। फिलहाल, विपक्षी दलों की इस पर चुप्पी भी एक संकेत है क्या वे इस आंदोलन को अन्ना आंदोलन की तर्ज पर अपना समर्थन देकर वर्तमान सत्ता के विरुद्ध एक हथियार बनाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं? देश में सरकारी नौकरियों और प्रवेश परीक्षाएं करोड़ों युवाओं के सपनों का आधार हैं। जब कोई पेपर लीक होता है, तो केवल एक परीक्षा ही प्रभावित नहीं होती, बल्कि लाखों मेहनती अभ्यर्थियों का भविष्य और व्यवस्था पर उनका अटूट विश्वास भी खंडित होता है। पिछले वर्षों में बार-बार सामने आए पेपर लीक के मामलों ने युवाओं को मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से तोड़कर रख दिया है। कुछ भ्रष्ट लोगों के लालच की कीमत देश का युवा अपनी मेहनत और वर्षों के समय से चुका रहा है। सरकारों ने इस समस्या से निपटने के लिए कड़े कानून बनाए हैं, दोषियों की गिरफ्तारी और कठोर दंड के प्रावधान भी किए गए हैं। यह आवश्यक है, लेकिन केवल कानून का होना ही पर्याप्त नहीं है। समाधान के लिए परीक्षा प्रक्रिया का तकनीकी रूप से अधिक सुरक्षित और पारदर्शी होना अनिवार्य है। डिजिटल सुरक्षा, एन्क्रिप्टेड प्रश्नपत्र प्रणाली, परीक्षा केंद्रों की सख्त निगरानी और जवाबदेही तय करना ही एकमात्र रास्ता है। इसके साथ ही, विशेष न्यायिक व्यवस्था हो ताकि दोषियों को शीघ्र सजा मिले और पीड़ितों को न्याय। अंततः, यह समस्या केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। जब हम गलत रास्तों को प्रश्रय देते हैं, तो ईमानदार प्रतियोगिता कमजोर पड़ती है। पेपर लीक और परीक्षा धांधली का स्थायी समाधान तभी संभव है जब सरकार, परीक्षा एजेंसियां, प्रशासन और समाज मिलकर काम करें। युवाओं का विश्वास ही राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी है। यदि यह विश्वास टूटता है, तो देश की प्रतिभा और विकास दोनों प्रभावित होंगे।

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर

इंजीनियर्स कॉलोनी, मान्यावास, मानसरोवर, जयपुर

सूचना

मंदिर प्रबंध समिति की आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है कि मंदिरजी का वार्षिक उत्सव दिनांक 13 एवं 14 जून 2026 को श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ मनाया जाएगा। यह पावन आयोजन आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में संपन्न होगा।

कार्यक्रम विवरण

दिनांक : 13 जून 2026 (शनिवार)

सायं 7:30 बजे

श्रीजी की आरती

भक्तामर पाठ दीप प्रज्ज्वलन के साथ

भक्तामर पाठ के पश्चात

ठंडाई एवं मिल्क रोज प्रसादी का आयोजन

दिनांक : 14 जून 2026 (रविवार)

प्रातः 6:30 बजे

पंचामृत अभिषेक

शांतिधारा

प्रातः 7:30 बजे से

श्री शांतिनाथ मंडल का संगीतमय विधान

साज-बाजे एवं भक्ति संगीत के साथ

प्रातः 11:30 बजे

वात्सल्य भोज

विशेष निवेदन

सभी श्रद्धालुओं से विनम्र अनुरोध है कि श्री शांतिनाथ मंडल विधान में प्रत्येक परिवार से कम से कम एक जोड़ा अवश्य पूजन में सहभागिता करे।

साथ ही सभी समाजबंधु अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित होकर अपनी सहभागिता एवं जिम्मेदारी का निर्वहन करें, ताकि मंदिरजी का वार्षिक उत्सव भव्य एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

सादर आमंत्रण

भवदीयः सकल जैन समाज, इंजीनियर्स कॉलोनी मान्यावास, मानसरोवर, जयपुर

संपर्क सूत्र :

अनिल जैन बोहरा

मनीष छाबड़ां

निःशुल्क स्वास्थ्य एवं नेत्र जांच शिविर के पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

मेट्रो मास हॉस्पिटल, जयपुर, ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.) एवं यूनियन फुटबॉल क्लब जयपुर (ट्रस्ट) के संयुक्त तत्वावधान में 7 जून 2026 को आयोजित होने वाले निःशुल्क मल्टीस्पेशियलिटी चिकित्सा परामर्श, स्वास्थ्य एवं नेत्र जांच शिविर के पोस्टर का विधिवत विमोचन किया गया। पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में मेट्रो मास हॉस्पिटल की डायरेक्टर रितु चौधरी, ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रमोद जैन भंवर, कोषाध्यक्ष मनीषा जैन ''कुसुम'', मार्केटिंग हेड संदीप माथुर एवं विशाल यादव सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित पदाधिकारियों ने बताया कि शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श प्रदान किया जाएगा। साथ ही ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, ईसीजी, नेत्र जांच एवं अन्य आवश्यक स्वास्थ्य जांच सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी। उन्होंने बताया कि शिविर का उद्देश्य आमजन को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ कराना तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। शिविर में विभिन्न रोगों के संबंध में विशेषज्ञों द्वारा आवश्यक परामर्श भी दिया जाएगा। संस्था पदाधिकारियों ने क्षेत्रवासियों एवं आमजन से अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने की अपील की।

महंत काठियाबाबा ने बागेश्वरधाम सरकार को दिया विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ का निमंत्रण

हनुमान टेकरी आश्रम में 8 जून से होगा सप्त दिवसीय विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। छोटी हरणी स्थित हनुमान टेकरी आश्रम के महंत बनवारीशरण काठियाबाबा ने बागेश्वरधाम पहुंचकर बागेश्वरधाम सरकार पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री से भेंट की तथा उन्हें पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर भीलवाड़ा में पहली बार आयोजित होने जा रहे सप्त दिवसीय विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ में पधारने का निमंत्रण दिया। महंत काठियाबाबा ने पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के बद्रीनाथ धाम में अज्ञातवास पूर्ण कर बागेश्वरधाम लौटने पर मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर पंडित शास्त्री ने विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ की सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए भीलवाड़ा में भविष्य में आयोजित होने वाले भव्य धार्मिक कार्यक्रम के निमंत्रण को स्वीकार किया। गौरतलब है कि पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के सान्निध्य में वर्ष 2024 में भी भीलवाड़ा में हनुमंत कथा का सफल आयोजन हो चुका है। उन्हें अवगत कराया गया कि हनुमान टेकरी आश्रम में महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में नियमित रूप से धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। साथ ही निकट भविष्य में एक और भव्य धार्मिक आयोजन की तैयारियां भी चल रही हैं, जिसकी विस्तृत जानकारी शीघ्र साझा की जाएगी। महंत बनवारीशरण काठियाबाबा ने बताया कि 8 से 14 जून तक आयोजित होने वाले विष्णु लक्ष्मी महायज्ञ को लेकर व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। आयोजन स्थल पर 11 कुण्डीय विशाल यज्ञ मंडप का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से दोपहर 12 बजे तक 44 यजमान एक साथ आहुतियां दे सकेंगे। उन्होंने बताया कि महायज्ञ के यज्ञाचार्य श्री शारदा सनातन परमार्थ न्यास के वेदाचार्य पंडित मुकेश शास्त्री होंगे। महायज्ञ के साथ प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से वृंदावन के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा भक्तिमय रासलीला का मंचन भी किया जाएगा।

जैन युवा महासभा के जिला अध्यक्ष बने अभिषेक जैन, सोनल जैन महामंत्री मनोनीत

महिला जिला अध्यक्ष पद पर रानी जैन की नियुक्ति

मुरैना/भिंड (मनोज जैन नायक)। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा की भिंड जिला शाखा के लिए अभिषेक जैन को जिला अध्यक्ष तथा पत्रकार सोनल जैन को जिला महामंत्री मनोनीत किया गया है। वहीं महिला शाखा की जिला अध्यक्ष के रूप में रानी जैन की नियुक्ति की गई है। युवा महासभा के सुमित जैन (दिल्ली) ने बताया कि संगठन के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विकेश मेहता ने भिंड जिले की नई कार्यकारिणी के गठन के तहत इन नियुक्तियों की घोषणा की। उन्होंने बताया कि नवमनोनीत तीनों पदाधिकारी जैन समाज की विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं तथा संतों की सेवा एवं समाजहित के कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विकेश मेहता ने नव नियुक्त पदाधिकारियों को निर्देश दिए कि भिंड जिले के प्रत्येक गांव एवं कस्बे में संगठन का विस्तार करते हुए व्यापक कार्यकारिणी का गठन किया जाए। साथ ही समाज की जनगणना अभियान को सशक्त बनाने, सदस्यता अभियान को गति देने तथा रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करने पर विशेष बल दिया जाए। मेहता ने बताया कि आने वाले समय में देशभर के 600 से अधिक जिलों में संगठन की कार्यकारिणियों का गठन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पिछले 40 दिनों में 30 नई जिला कार्यकारिणियों का गठन किया जा चुका है, जो संगठन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस पुनीत कार्य में सहयोग देने के लिए उन्होंने देशभर के युवा कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

8 दिवसीय शिविर के सातवें दिन बच्चों में दिखा उत्साह और उमंग

नसीराबाद (रोहित जैन)

पूज्य सिंधी पंचायत एवं सिंधु सभा के तत्वावधान में आयोजित आठ दिवसीय बाल संस्कार शिविर के सातवें दिन बच्चों में उत्साह और उमंग चरम पर दिखाई दिया। शिविर में बच्चे विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। मुखी काली बाबानी ने बताया कि शिविर की शुरूआत प्रार्थना, शिविर गीत, प्रतिज्ञा एवं योगासन के साथ की गई। इसके पश्चात ममता काकानी ने बच्चों को आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधि के अंतर्गत ''वेस्ट टू बेस्ट'' की उपयोगी कला सिखाई। गीता साधवानी ने बच्चों को सिंधी कविताएं, सिंधी महापुरुषों की जीवनियां एवं उनके आदर्शों से परिचित कराया। वहीं अंजली तेजवानी ने सिंधी गीत-संगीत तथा सिंधी लाड़ो का प्रशिक्षण दिया। गोपी तेजवानी ने भगवान झूलेलाल के जन्म एवं उनकी लीलाओं के बारे में जानकारी दी। वर्षा कृपलानी ने बच्चों को नृत्य का प्रशिक्षण देते हुए आदर्श बालक के गुणों के बारे में बताया। शिविर प्रभारी राजेश लहरवानी ने बताया कि शिविर के अंतिम एवं आठवें दिन बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। इस दौरान बच्चे आठ दिनों में सीखी गई विभिन्न गतिविधियों का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम में गीत, संगीत, नृत्य, कविताएं, सिंधी महापुरुषों के जीवन प्रसंग, सिंधी महीनों के नाम, सप्ताह के दिनों के नाम तथा रंगों के नामों की प्रस्तुति दी जाएगी। उन्होंने बताया कि समापन समारोह में सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। मुखी काली बाबानी ने बताया कि अंतिम दिन शिविर प्रातः 8 बजे प्रारंभ होगा तथा प्रातः 9:30 बजे से बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी। उन्होंने नगर के समस्त सिंधी समाजजनों से इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर बच्चों का उत्साहवर्धन करने की अपील की। कार्यक्रम के पश्चात सभी के लिए नाश्ते की व्यवस्था भी रखी गई है। उन्होंने बताया कि सातवें दिन कुमार बाबानी, भागचंद राजानी, शिवाजी टहलवानी, नानक टहलवानी, गोविंद नाथरानी, जयकिशन कृपलानी, गीता साधवानी, अंजली तेजवानी, गोपी तेजवानी, ममता काकानी एवं वर्षा कृपलानी ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

नेपाल-भारत मैत्री यात्रा, अंतरराष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी

पत्रकार सम्मेलन एवं साहित्योत्सव संपन्न

काठमांडू. शाबाश इंडिया। अथाई मीडिया इंटरनेशनल एवं अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 10 दिवसीय नेपाल-भारत मैत्री यात्रा (24 मई से 2 जून 2026) के अंतर्गत नेपाल जैन परिषद के सहयोग से कमल पोखरी स्थित भगवान महावीर जैन निकेतन में अंतरराष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी, पत्रकार सम्मेलन एवं साहित्योत्सव का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता नेपाल जैन परिषद के अध्यक्ष सुशील जैन ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार के संस्कृति, पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्रालय के कार्यकारी निदेशक आचार्य डॉ. लक्ष्मण पंथी उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में भगवान महावीर जैन निकेतन के अध्यक्ष लोकमान्य गोलछा, नेपाल जैन परिषद के पूर्व अध्यक्ष ज्योति कुमार बेगानी, नेपाल श्वेतांबर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष दिनेश कुमार नौलखा, नेपाल अणुव्रत समिति के अध्यक्ष फूल कुमार लालवानी तथा मुंबई के ज्योतिषविद् पिनारका मिस्त्री शामिल रहे। स्थानीय समाजसेवी सुभाष सेठी, पंकज जैन एवं सुमित जैन की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही। समारोह का शुभारंभ अथाई मीडिया इंटरनेशनल के अध्यक्ष डॉ. जयेन्द्रकीर्ति स्वामी, संस्थापक एवं निदेशक डॉ. अखिल बंसल, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के अध्यक्ष जगदीश प्रसाद जैन तथा कार्याध्यक्ष अनिल जैन (आईपीएस) सहित अन्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। स्वागताध्यक्ष वीरेन्द्र सरावगी ने सभी अतिथियों का रुद्राक्ष माला एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। डॉ. अल्पना जैन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आचार्य विद्यासागर जी की कृति ''मूकमाटी'' के नेपाली अनुवाद, आचार्य विशुद्ध सागर जी की कृति ''वस्तुत्व महाकाव्य'' तथा प्राकृत एवं संस्कृत के विद्वान डॉ. श्रीयांश कुमार की पुस्तक ''जोग सारो सहज योग ख्याति संस्कृत टीका'' का विमोचन किया गया। साथ ही डॉ. अखिल बंसल द्वारा संपादित पाक्षिक पत्र समन्वय वाणी के नेपाल यात्रा विशेषांक तथा जगदीश प्रसाद जैन द्वारा संपादित जैसवाल जैन जागरण के नवीन अंक का भी लोकार्पण किया गया।

टेक्नोग्लोब को मिला ''नेशन बिल्डर अवॉर्ड''

जयपुर. शाबाश इंडिया। वैशाली नगर स्थित होटल स्वर्ण महल में आयोजित एक भव्य समारोह में हिन्दुस्तान बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा टेक्नोग्लोब को आईटी स्किलिंग श्रेणी में प्रतिष्ठित ''नेशन बिल्डर अवॉर्ड'' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान युवाओं को रोजगारोन्मुखी तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर एवं रोजगार योग्य बनाने में संस्था के उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह सम्मान टेक्नोग्लोब की ओर से वरिष्ठ प्रबंधक विजय गुप्ता एवं शकेब खान ने प्राप्त किया। टेक्नोग्लोब द्वारा अकाउंटिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, वेब डेवलपमेंट, डेटा साइंस, वीडियो एडिटिंग तथा अन्य रोजगारोन्मुखी तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। संस्था का उद्देश्य युवाओं को आधुनिक तकनीकी कौशल से सशक्त बनाकर रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देना है। टेक्नोग्लोब के प्रबंध निदेशक डॉ. शिराज खान ने बताया कि वर्तमान में संस्था के 6 देशों में 150 से अधिक प्रशिक्षण केंद्र संचालित हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि पिछले 25 वर्षों में टेक्नोग्लोब 4 लाख से अधिक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण एवं करियर सहयोग प्रदान कर चुका है। डॉ. खान ने इस उपलब्धि का श्रेय टेक्नोग्लोब के सभी टीम सदस्यों, प्रशिक्षकों, विद्यार्थियों एवं फ्रेंचाइजी पार्टनर्स को देते हुए उनके निरंतर सहयोग, समर्पण और विश्वास के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्था भविष्य में भी युवाओं को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। इस सम्मान को टेक्नोग्लोब की उत्कृष्ट कार्यशैली, कौशल विकास के क्षेत्र में योगदान तथा युवाओं के सशक्तिकरण की दिशा में किए जा रहे सतत प्रयासों की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

गुर्दे की पथरी (किडनी स्टोन) : कारण, लक्षण, प्रकार, बचाव एवं होम्योपैथिक चिकित्सा

डॉ. एम.एल. जैन "मणि"

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ एवं पूर्व शैक्षणिक सदस्य, होम्योपैथिक विश्वविद्यालय, जयपुर

गुर्दे की पथरी क्या है?

गुर्दे में बनने वाले कठोर खनिज एवं लवणों के जमाव को गुर्दे की पथरी या मूत्र पथरी कहा जाता है। जब मूत्र में उपस्थित कैल्शियम, ऑक्सलेट, यूरिक एसिड अथवा अन्य खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में एकत्र होकर क्रिस्टल का रूप ले लेते हैं, तब धीरे-धीरे पथरी का निर्माण होता है। पथरी का आकार रेत के कण जितना छोटा से लेकर कई सेंटीमीटर तक बड़ा हो सकता है। समय पर उपचार एवं उचित चिकित्सा से अनेक मामलों में पथरी को बिना शल्य चिकित्सा के भी बाहर निकाला जा सकता है।

गुर्दे की पथरी बनने के प्रमुख कारण

कम पानी पीना एवं शरीर में पानी की कमी होना।
अत्यधिक नमक का सेवन।
ऑक्सलेट युक्त खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन, जैसे पालक, चाय एवं चॉकलेट।
अधिक पशु-प्रोटीन का सेवन।
मोटापा एवं शारीरिक निष्क्रियता।
वंशानुगत कारण या पारिवारिक इतिहास।
बार-बार मूत्र संक्रमण होना।
पैराथायरॉइड ग्रंथि संबंधी रोग।
कुछ दवाओं का लंबे समय तक उपयोग।
गर्म जलवायु में रहने से शरीर में पानी की कमी होना।
पथरी के प्रमुख लक्षण
कमर या पीठ के एक अथवा दोनों ओर अचानक तेज दर्द।
दर्द का पेट के निचले हिस्से या जननांगों तक फैलना।
पेशाब करते समय जलन होना।
बार-बार पेशाब आने की इच्छा होना।
पेशाब में खून आना।
मितली एवं उल्टी होना।
पेशाब का रुक-रुक कर आना।
मूत्र में दुर्गंध या धुंधलापन।
संक्रमण होने पर बुखार एवं ठंड लगना।

गुर्दे की पथरी के प्रकार
1. कैल्शियम पथरीः सबसे सामान्य प्रकार की पथरी, जो प्रायः कैल्शियम ऑक्सलेट से बनती है।
2. यूरिक एसिड पथरीः अधिक प्रोटीनयुक्त भोजन एवं गाउट रोगियों में अधिक पाई जाती है।
3. स्ट्रुवाइट पथरीः मूत्र संक्रमण के कारण बनती है तथा तेजी से बढ़ सकती है।
4. सिस्टीन पथरीः एक दुर्लभ आनुवंशिक विकार के कारण बनती है।
इसके अतिरिक्त पथरी गुर्दे, यूरेटर (मूत्रवाहिनी) अथवा मूत्राशय में भी पाई जा सकती है।

बचाव एवं सावधानियां

- ✅ प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं।
- ✅ अधिक नमक एवं जंक फूड से बचें।
- ✅ संतुलित एवं पौष्टिक आहार लें।
- ✅ नियमित व्यायाम करें।
- ✅ मूत्र संक्रमण का समय पर उपचार कराएं।
- ✅ अत्यधिक चाय, कॉफी एवं शीतल पेय का सेवन सीमित रखें।
- ✅ चिकित्सकीय सलाह अनुसार समय-समय पर यूरिन जांच एवं सोनोग्राफी कराएं।

कुछ उपयोगी घरेलू उपाय

पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन।
नींबू पानी का सेवन, जो साइट्रेट की मात्रा बढ़ाकर कुछ प्रकार की पथरी बनने की संभावना कम कर सकता है।
सीमित मात्रा में नारियल पानी का सेवन।
फल एवं सब्जियों से भरपूर संतुलित आहार।
ध्यान दें: बड़ी पथरी या मूत्र मार्ग में फंसी पथरी के लिए केवल घरेलू उपाय पर्याप्त नहीं होते। ऐसी स्थिति में विशेषज्ञ चिकित्सक से परामर्श आवश्यक है।

होम्योपैथिक चिकित्सा

होम्योपैथी में दवा का चयन रोगी के संपूर्ण लक्षणों, पथरी के स्थान, आकार एवं प्रकृति के आधार पर किया जाता है। प्रमुख औषधियों में बर्बेरिस वल्गेरिस, लाइकोपोडियम, सारसापेरिला, कैन्थरिस, ओसिमम कैनम, हाइड्रेंजिया, पेरेरा ब्रावा, सॉलिडेगो, रुबिया टिंक्टोरिया एवं अन्य औषधियां शामिल हैं। इन औषधियों का चयन रोगी की व्यक्तिगत स्थिति के अनुसार योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक द्वारा किया जाना चाहिए। स्वयं दवा लेना उचित नहीं है।

कब तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें?

असहनीय दर्द हो।
पेशाब बंद हो जाए।
पेशाब में अधिक रक्त आने लगे।
तेज बुखार एवं ठंड लग रही हो।
लगातार उल्टियां हो रही हों।
एक ही किडनी हो या पहले से किडनी रोग हो।
पथरी मूत्र मार्ग में फंस गई हो।
गुर्दे की पथरी एक सामान्य लेकिन अत्यंत पीड़ादायक समस्या है। पर्याप्त पानी पीना, संतुलित आहार लेना तथा नियमित जांच कराना इसके बचाव के प्रमुख उपाय हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा कुछ रोगियों में राहत प्रदान करने एवं पथरी निष्कासन की प्रक्रिया में सहायक हो सकती है, किंतु बड़ी पथरी, संक्रमण या मूत्र अवरोध जैसी स्थितियों में विशेषज्ञ चिकित्सकीय सलाह आवश्यक है। उपचार के दौरान रोगी को धैर्य रखना चाहिए तथा किसी भी प्रकार की दवा केवल योग्य एवं पंजीकृत चिकित्सक के परामर्श से ही लेनी चाहिए। उचित चिकित्सा, आहार-विहार एवं नियमित जांच के माध्यम से पथरी की समस्या पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है।

धन की दौड़ में धर्म न छूटे, यही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

नेवरिया. शाबाश इंडिया

जीवन अनिश्चित है, इसलिए धर्म, ध्यान और आत्मकल्याण के कार्यों को भविष्य पर नहीं टालना चाहिए। बुढ़ापा आने के बाद शरीर पहले जैसी क्षमता नहीं रखता, इसलिए जब तक तन और मन समर्थ हैं, तब तक धर्म-साधना का पुरुषार्थ कर लेना चाहिए। यह उद्बोधन श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी महाराज ने नेवरिया में आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने कहा कि अधिकांश लोग यह सोचकर धर्म को टालते रहते हैं कि अभी कमाने और सांसारिक कार्यों का समय है, धर्म तो वृद्धावस्था में कर लेंगे। किंतु समय और जीवन का कोई निश्चित भरोसा नहीं है। कब जीवन का अंतिम क्षण आ जाए, यह कोई नहीं जानता। ऐसे में यदि धर्म-साधना

को टालते रहे तो अनेक शुभ संकल्प और आध्यात्मिक आकांक्षाएं अधूरी रह सकती हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवनभर धन और भौतिक उपलब्धियों के पीछे दौड़ता रहता है, जबकि अंतिम समय में उसके साथ केवल शुभ कर्म और आध्यात्मिक अर्जन ही जाते हैं। इसलिए समय रहते धर्म, ध्यान, स्वाध्याय और आत्मचिंतन को जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। धन कमाना आवश्यक है, लेकिन धन की दौड़ में धर्म न छूटे, यही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। धर्मसभा से पूर्व पहुना से नेवरिया पधारने पर युवाचार्यश्री एवं साध्वीवृंद का गुरु कजोड़ी यश स्वाध्याय भवन के अध्यक्ष शांतिलाल बापना, मंत्री हस्तीमल बापना (चेन्नई), अप्रवासी महावीर बापना, संरक्षक मांगीलाल बापना, मदनलाल बापना, संजय कुमार बापना, प्रकाशचंद बापना, महेन्द्र बापना, नवरतन बापना, ललित बापना, पारसमल बापना, सुजानमल बापना, नेमीचंद बापना, महावीर रांका, राजेश बाफना सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अगवानी कर अभिनंदन किया।

गुना चलो • गुना चलो • गुना चलो

गुरुवर पधारो राजस्थान

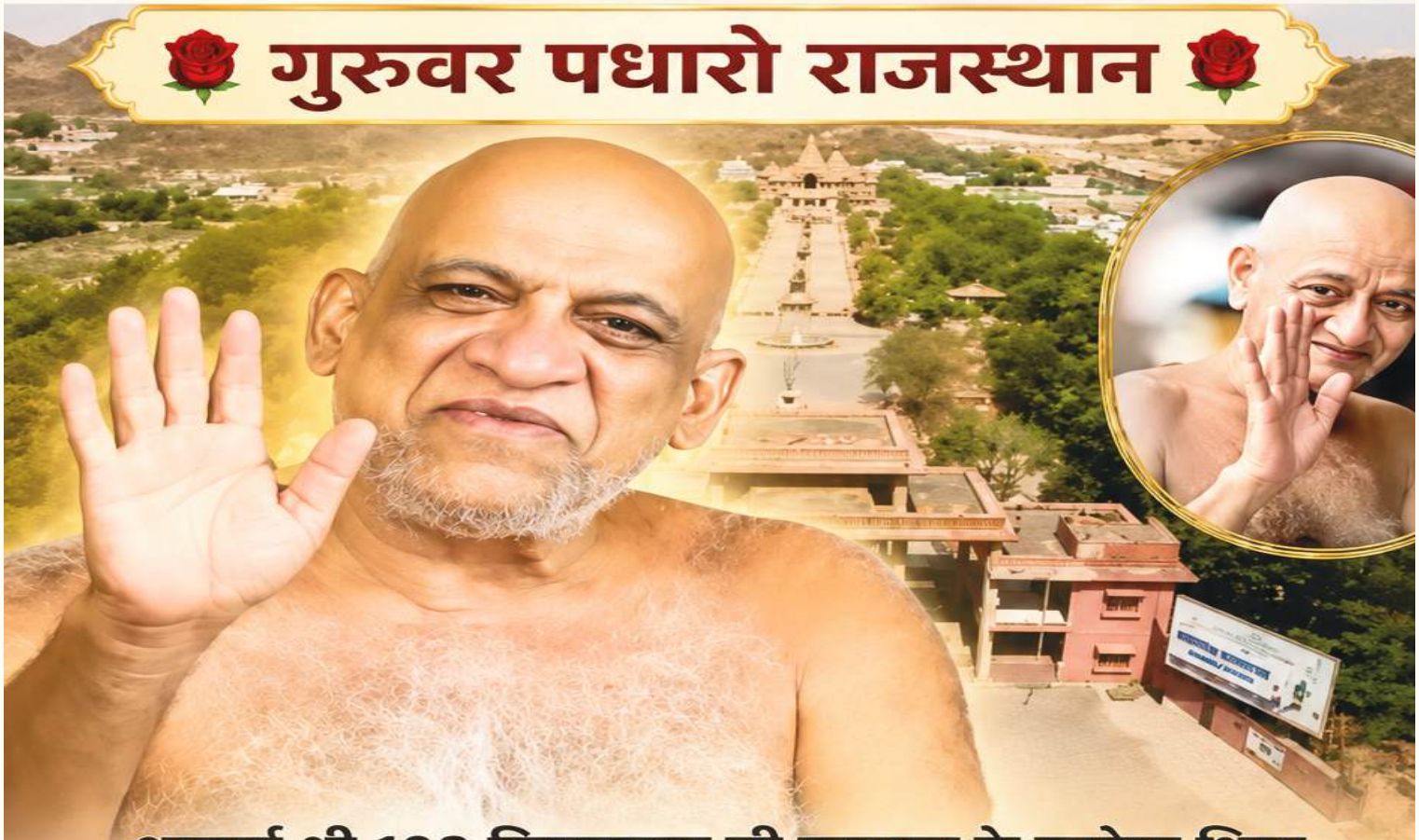

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य

परम पूज्य 108 **निर्यापक श्रमण**

जिनशासन के शेर

मुनिपुंगव सुधासागर जी महाराज

के पावन चरणों में

2026 के भव्य चातुर्मास हेतु

राजस्थान समाज द्वारा

श्रीफल समर्पण

का शुभ अवसर

स्थान : गुना (म.प्र.) | दिनांक : 8 जून 2026

सादर निवेदक

समस्त सुधासागर जी गुरु भक्त

राजस्थान

माता-पिता की पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में 126 यूनिट रक्त संग्रहित

रक्तकोष फाउंडेशन बूंदी के ब्रांड एंबेसडर डॉ. बृजकिशोर शर्मा एवं प्रवक्ता रामलाल मीणा ने किया रक्तदान

बूंदी. शाबाश इंडिया

रक्तकोष फाउंडेशन जिला बूंदी के ब्रांड एंबेसडर एवं प्राचार्य डॉ. बृजकिशोर शर्मा के माता-पिता की पुण्यतिथि के अवसर पर 4 जून 2026 को महात्मा गांधी बालिका विद्यालय, तालेड़ा में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 126 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। रक्तकोष फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष रामलक्ष्मण मीणा (नर्सिंग ऑफिसर) ने बताया कि शिविर के सफल आयोजन में उपाध्यक्ष स्वाति दाधीच, प्रवक्ता रामलाल मीणा, संयोजक लोकेश गोस्वामी, सचिव सीताराम मीणा, बूंदी ब्लॉक अध्यक्ष शिवराज बैरागी, अरुंधति दाधीच, विकास पंचाल, डॉ. मुकेश मीणा, डॉ. दिलीप राठौड़, डॉ. नरेश शर्मा, पुरुषोत्तम सोनी, के.के. शर्मा, बलवंत चौधरी, नवीन सोनी, गणेश गौतम, मनोहर वैष्णव, जावेद जैड, प्रेमशंकर राठौड़, लोकेश शर्मा, विशाल वर्मा सहित विद्यालय एवं महाविद्यालय स्टाफ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रक्त संग्रहण के लिए बूंदी ब्लड बैंक की टीम ने 91 यूनिट तथा एमबीएस ब्लड बैंक की टीम ने 35 यूनिट रक्त एकत्रित किया। इसकी जानकारी डॉ. बृजकिशोर शर्मा ने दी।

अनेक गणमान्यजन रहे उपस्थित

रक्तदान शिविर में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के प्रतिनिधियों सहित वाई.एस. प्रभाकर (सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, सीडीआरआई लखनऊ), सीए अभिनव शर्मा, एडवोकेट नरेंद्र मिश्रा, मानकचंद मीणा, रामलक्ष्मण मीणा, रक्तवीर राजेश खोईवाल, रवि गोंद, रामलाल मीणा, सीताराम मीणा एवं शिवराज बैरागी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी ने दिवंगत आत्माओं के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

रक्तवीरों ने दिखाई सेवा भावना

शिविर में बड़ी संख्या में युवाओं, महिलाओं एवं समाजसेवियों ने रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। इस अवसर पर डॉ. बृजकिशोर शर्मा, रामलाल मीणा, डॉ. भवानी सिंह, डॉ. दिलीप राठौड़, सुनील मीणा, देवकिशन गुर्जर, सचिन कहार, नितिन मालव, भारती कुमारी, डॉ. बंटेश कुमार मीणा, मूलचंद मेघवाल, विशाल कुमावत, प्राची शर्मा, गणेश गौतम, गौरव जैन, विकास पंचाल, विक्रम मेघवाल, निखिल वैष्णव, डॉ. दिनेश कुमार मीणा सहित 126 रक्तवीरों ने रक्तदान किया।

रक्तदान के प्रति किया जागरूक

ब्रांड एंबेसडर डॉ. बृजकिशोर शर्मा ने कहा कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को वर्ष में कम से कम दो से चार बार रक्तदान करना चाहिए। इससे जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध हो सकेगा तथा ब्लड बैंकों में रक्त की कमी को दूर किया जा सकेगा।

फाउंडेशन पदाधिकारियों की रही सक्रिय भूमिका

रक्तकोष फाउंडेशन जिला बूंदी के ब्रांड एंबेसडर डॉ. बृजकिशोर शर्मा, जिलाध्यक्ष रामलक्ष्मण मीणा, उपाध्यक्ष स्वाति दाधीच, प्रवक्ता रामलाल मीणा, सचिव सीताराम मीणा, संयोजक लोकेश गोस्वामी, बूंदी ब्लॉक अध्यक्ष शिवराज बैरागी एवं अरुंधति दाधीच सहित सभी पदाधिकारियों ने शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आयोजकों ने सभी रक्तदाताओं, सहयोगियों एवं चिकित्सा टीमों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार के जनहितकारी आयोजनों को जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया।

एसी का प्रयोग कम कर पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी बनें : महावीर इंटरनेशनल

शाबाश इंडिया। विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित महावीर इंटरनेशनल एपेक्स की ई-चौपाल में पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा बचत पर सार्थक चर्चा हुई। इस अवसर पर वक्ताओं ने एसी के अत्यधिक उपयोग को कम करने तथा पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया। वक्ताओं ने कहा कि एयर कंडीशनर (एसी) का बढ़ता उपयोग न केवल विद्युत खपत को बढ़ाता है, बल्कि पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि एसी से निकलने वाली गर्म हवा बाहरी वातावरण के तापमान को बढ़ाने में योगदान करती है। साथ ही अत्यधिक ठंडे वातावरण में लंबे समय तक रहने से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं। चर्चा के दौरान सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए पंखों एवं कूलरों का अधिक उपयोग करने तथा आवश्यकता अनुसार ही एसी का प्रयोग करने का सुझाव दिया। साथ ही ऊर्जा संरक्षण के माध्यम से कार्बन उत्सर्जन कम करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी सदस्यों ने 5 जून को दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक दो घंटे एसी बंद रखने का संकल्प लिया तथा समाज के अन्य लोगों से भी इस अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। ई-चौपाल में सुमेर सिंह कर्णावत, राजलक्ष्मी भंडारी, निर्मल सिंघवी, विजया चौधरी, नीलू जैन, पृथ्वीराज जैन, रतन फलोदिया, प्रदीप टोंग्या एवं अजीत कोठिया ने पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा बचत विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ नीलू जैन (दिल्ली) द्वारा प्रार्थना के साथ हुआ। संचालन महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया ने किया, जबकि आभार रतन फलोदिया ने व्यक्त किया। ई-चौपाल में 26 वीर एवं वीराओं ने सहभागिता कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर ने सुथारिया गांव में वितरित की जीवन रक्षक टैबलेट किट

ग्रामीणों को हार्ट अटैक एवं कार्डियक अरेस्ट से बचाव की दी जानकारी

गढ़ी परतापुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर केंद्र द्वारा सुथारिया गांव (झड़स) में ग्रामीणों के लिए जागरूकता एवं सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हार्ट अटैक एवं कार्डियक अरेस्ट जैसी आपातकालीन स्थितियों में प्राथमिक सहायता के रूप में उपयोगी जीवन रक्षक टैबलेट किट का वितरण किया गया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर के गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने ग्रामीणों को हार्ट केयर संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए जीवन रक्षक किट भेंट की। उन्होंने बताया कि आपात स्थिति में समय पर प्राथमिक उपचार किसी व्यक्ति का जीवन बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। साथ ही उन्होंने ग्रामीणों से आवश्यकता पड़ने पर किट का सही उपयोग करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान अजीत कोठिया ने प्रवीण कतीजा, मीनाक्षी कतीजा, प्रकाश कतीजा, दीपिका तबियार, रामलाल डामोर एवं बाबूराम कतीजा सहित ग्रामीणों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। इस अवसर पर प्रवीण कतीजा को महावीर इंटरनेशनल एपेक्स की मुख पत्रिका ''महावीर प्रवाह'' की प्रति भी भेंट की गई। साथ ही ग्रामीणों को महावीर इंटरनेशनल द्वारा संचालित विभिन्न सेवा एवं जनकल्याणकारी गतिविधियों की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का संचालन अजीत कोठिया ने किया, जबकि आभार प्रवीण कतीजा ने व्यक्त किया। ग्रामीणों ने महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा छोटे से गांव सुथारिया को सेवा कार्यों के लिए चयनित किए जाने पर संस्था का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए सभी ग्रामीणों से अधिकाधिक वृक्षारोपण करने तथा पर्यावरण संवर्धन में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया गया।

भगवान के गुणों का वर्णन है जिन सहस्रनाम : जिनदेवी माताजी

राणाजी की नसियां में जिन सहस्रनाम मंत्रों से हुई वृहद् शांतिधारा

जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य रत्न बाहुबली महाराज की पट्टशिष्या गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न जिनदेवी माताजी ससंघ इन दिनों आगरा रोड स्थित खानिया क्षेत्र की राणाजी की नसियां में विराजमान हैं। पूज्य माताजी के सान्निध्य में गुरुवार को जिन सहस्रनाम मंत्रों से वृहद् शांतिधारा का आयोजन किया गया। इसके पश्चात बकुल पुष्पों से भव्य पुष्पार्चना की गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए जिनदेवी माताजी ने जिन सहस्रनाम की महिमा का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जिन सहस्रनाम भगवान जिनेन्द्र के एक हजार पवित्र नामों का स्तोत्र है, जिसमें तीर्थंकर भगवान के विविध गुणों, महिमाओं और आध्यात्मिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है। माताजी ने कहा कि जिनेश्वर भगवान के सहस्रनाम केवल नामों का संग्रह नहीं हैं, बल्कि वे भगवान के अनंत गुणों का स्मरण कराते हैं। प्रत्येक नाम साधक को आत्मा के वास्तविक स्वरूप की ओर प्रेरित करता है और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि भगवान को अरिहंत, जिन, वीतराग, सर्वज्ञ, परमात्मा, नाथ और प्रभु सहित अनेक नामों से संबोधित किया जाता है। ये नाम भगवान की महिमा का वर्णन मात्र नहीं, बल्कि उनके दिव्य गुणों का परिचय हैं। सहस्रनाम का जप करते समय साधक भगवान के गुणों का चिंतन करता है और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। धर्मसभा का समापन जिनवाणी स्तुति के साथ हुआ। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि प्रातःकाल मूलनायक भगवान वासुपूज्य के अभिषेक के पश्चात जिन सहस्रनाम शांतिधारा का आयोजन किया गया। इसके बाद धर्मसभा के प्रारंभ में चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य माताजी का पाद प्रक्षालन कर जिनवाणी भेंट की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

आज सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में होगा भव्य मंगल प्रवेश

विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न जिनदेवी माताजी ससंघ का शुक्रवार, 5 जून 2026 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सेठी कॉलोनी में भव्य मंगल प्रवेश होगा। उन्होंने बताया कि पूज्य माताजी प्रातः 6:30 बजे खानियाजी से मंगल विहार करते हुए सेठी कॉलोनी के लिए प्रस्थान करेंगी, जहां श्रद्धालुओं द्वारा उनका भव्य स्वागत किया जाएगा।

श्री समग्र जैन समाज भारत फेडरेशन का भव्य सम्मान समारोह एवं सामाजिक समरसता कार्यक्रम संपन्न

कोलकाता. शाबाश इंडिया

श्री समग्र जैन समाज भारत फेडरेशन द्वारा कोलकाता स्थित रोज बैंक्वेट में भव्य सम्मान समारोह एवं सामाजिक समरसता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस गरिमामयी कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के जनप्रतिनिधियों, वरिष्ठ अधिकारियों, समाजसेवियों, शिक्षाविदों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों में विधायक तपस राय, विधायक गौरीशंकर घोष, समाजसेवी एवं उद्योगपति पीयूष कनोडिया सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में संगठन की ओर से सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ, सम्मान-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष साहिल जैन ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनसमुदाय का स्वागत करते हुए कहा कि समाज एवं राष्ट्र निर्माण में जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा सामाजिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए जनकल्याण एवं सामाजिक विकास के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने भगवान महावीर स्वामी के अमर संदेश ''जियो और जीने दो'' को वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए सामाजिक सद्भाव, शिक्षा, नैतिक मूल्यों एवं मानवीय संवेदनाओं को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

कार्यक्रम का सबसे प्रेरणादायक क्षण तब आया जब आर्थिक रूप से कमजोर एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इन विद्यार्थियों ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपने परिवार, क्षेत्र एवं समाज का नाम गौरवान्वित किया है।

सम्मानित विद्यार्थियों में शामिल थे

स्नेहा कुंडू (बारबेलुन, भातार)
सागर मंडल (शांतिपुर, नदिया)
सायन माझी (बागनान, हावड़ा)
मिराजुल इस्लाम (मिदनापुर)
इवाना नसरीन (साशन)

विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से समाजसेवी एवं उद्योगपति जॉय सेनगुप्ता के सौजन्य से सभी विद्यार्थियों को एक-एक टैबलेट प्रदान किया गया। साथ ही उनके घरों में सोलर पैनल स्थापित कराने की घोषणा भी की गई, जिससे वे विद्युत संबंधी समस्याओं एवं आर्थिक बाधाओं से मुक्त होकर अपनी शिक्षा निर्बाध रूप से जारी रख सकें। इस पहल की उपस्थित अतिथियों, शिक्षाविदों एवं समाजजनों ने मुक्तकंठ से सराहना करते हुए इसे शिक्षा प्रोत्साहन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में एक अनुकरणीय कदम बताया।

समाज और सरकार के बीच समन्वय का सशक्त मंच

संगठन के संरक्षक दीपक सेठी ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं तथा सरकार और समाज के मध्य समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने संगठन की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे रचनात्मक प्रयास संगठन को निरंतर नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। इस अवसर पर श्री समग्र जैन समाज भारत फेडरेशन की ओर से जॉय सेनगुप्ता के समाजोपयोगी योगदान के लिए उनका विशेष सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के अंत में संगठन के राष्ट्रीय सचिव रोशन जैन ने सभी विशिष्ट अतिथियों, सहयोगियों, समाजजनों एवं उपस्थित जनसमुदाय के प्रति आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का गरिमामय एवं सफल समापन हुआ।

इंडियन आइडल फाइनलिस्ट स्नेहा शंकर और डॉ. पामिल मोदी बिखेरेंगी सुरों का जादू

आरएनटी मेडिकल कॉलेज में आज संगीत, युवा ऊर्जा और सामाजिक सरोकारों का अनूठा संगम

उदयपुर. शाबाश इंडिया। झीलों की नगरी उदयपुर शुक्रवार को एक यादगार संगीतमय शाम की साक्षी बनने जा रही है, जहां संगीत, संवेदनाएं और युवा ऊर्जा एक साथ मंच पर नजर आएंगी। इंडियन आइडल सीजन-15 की चर्चित फाइनलिस्ट एवं युवा पार्श्व गायिका स्नेहा शंकर अपनी मधुर आवाज का जादू बिखेरने के लिए आरएनटी मेडिकल कॉलेज परिसर पहुंचेंगी। जे.के. तायलिया फाउंडेशन द्वारा इकोन के सहयोग से आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का शुभारंभ शाम 7 बजे होगा। आयोजन में प्रवेश आमंत्रण पत्र के माध्यम से रहेगा। फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. जे.के. तायलिया ने गुरुवार को आयोजित प्रेस वार्ता में बताया कि स्नेहा शंकर भारतीय संगीत जगत की उभरती हुई प्रतिभाओं में प्रमुख स्थान रखती हैं। संगीत उनके लिए केवल कला नहीं, बल्कि पारिवारिक विरासत भी है। वे प्रसिद्ध सूफी गायन जोड़ी शंकर-शंभू के स्वर्गीय शंकर की पौत्री तथा प्रख्यात संगीतकार एवं पार्श्व गायक राम शंकर की पुत्री हैं। उन्होंने मात्र तीन वर्ष की आयु से ही संगीत का विधिवत प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिया था। इंडियन आइडल के मंच पर उनकी प्रस्तुतियों ने देशभर के दर्शकों के साथ-साथ श्रेया घोषाल, सोनू निगम, शंकर महादेवन, विशाल ददलानी, बादशाह और भूषण कुमार जैसी संगीत जगत की प्रतिष्ठित हस्तियों को भी प्रभावित किया। उनकी प्रतिभा को देखते हुए देश की अग्रणी संगीत कंपनी टी-सीरीज ने उन्हें रिकॉर्डिंग कॉन्ट्रैक्ट प्रदान किया। हाल ही में स्नेहा शंकर ने ऑस्कर विजेता संगीतकार ए.आर. रहमान के साथ फिल्म ''ठग लाइफ'' तथा लोकप्रिय संगीतकार विशाल मिश्रा के साथ फिल्म ''हक'' के लिए अपनी आवाज दी है। इसके अलावा वे कई फिल्मों, वेब सीरीज, टेलीविजन धारावाहिकों और संगीत एलबमों के लिए भी रिकॉर्डिंग कर चुकी हैं। इकोन के प्रतिनिधियों ने बताया कि संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, युवा सशक्तिकरण, व्यक्तित्व विकास और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में निरंतर कार्यरत है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से युवाओं को प्रेरित करना और प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना संस्था का प्रमुख उद्देश्य है। डॉ. तायलिया ने कहा कि यह कार्यक्रम केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, समाजसेवा और युवा शक्ति के समन्वय का उत्सव है। कार्यक्रम में स्नेहा शंकर की प्रस्तुति के साथ उदयपुर की प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायिका एवं संगीतकार डॉ. पामिल मोदी भी अपनी प्रस्तुति देंगी। वर्तमान में वे मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रभारी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं तथा शहर के विख्यात संगीतज्ञ डॉ. प्रेम भंडारी की पुत्री हैं। मेवाड़ की सांस्कृतिक धरोहर, लोक कलाओं और संगीत परंपराओं के संरक्षण के लिए समर्पित डॉ. जे.के. तायलिया फाउंडेशन समाज के विभिन्न वर्गों–अनाथ बच्चों, दिव्यांगजनों, वरिष्ठ नागरिकों एवं जरूरतमंद परिवारों–के कल्याण हेतु भी निरंतर कार्य कर रहा है। आयोजकों के अनुसार यह कार्यक्रम संस्कृति, संगीत और सामाजिक प्रतिबद्धता के समन्वित दृष्टिकोण का सशक्त उदाहरण बनेगा।

रिपोर्ट : राकेश शर्मा 'राजदीप'

किशनगढ़ में चातुर्मास हेतु आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज को श्रीफल भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया

बड़ के बालाजी स्थित चंद्रगिरि तीर्थ पर विराजमान वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ के समक्ष वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु किशनगढ़ नगर की ओर से श्रद्धापूर्वक श्रीफल भेंट कर विनम्र निवेदन किया गया। इस अवसर पर श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत, मदनगंज-किशनगढ़ के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं समाज के गणमान्यजनों ने आचार्य श्री से किशनगढ़ की पुण्य धरा पर चातुर्मास करने की भावपूर्ण प्रार्थना की। समाजजनों ने श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ आचार्य श्री के समक्ष अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए चातुर्मास का निवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत के संरक्षक विजयकुमार कासलीवाल, पारसमल बाकलीवाल एवं भागचंद बोहरा, अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बैद, मंत्री प्रदीप गंगवाल, उपमंत्री नरेश गंगवाल सहित विमल पाटनी, राजकुमार दोषी, संजय पापड़ीवाल, कैलाश पाटनी, पारसमल पांड्या, राजकुमार बड़जात्या, राजेन्द्र सोगानी, मुकेश काला, राजेश पाटनी (मेड़ता), जिनेन्द्र बोहरा, निर्मल पाटोदी, प्रदीप बाकलीवाल, कमल बैद, जयकुमार बैद, भागचंद जैन एवं महावीर प्रसाद बड़जात्या उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त आदिनाथ पंचायत की ओर से मंत्री प्राणेश बज, उपमंत्री इन्द्रचंद पाटनी सहित अनेक समाजजन भी कार्यक्रम में शामिल हुए। समाज के सभी श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री के सान्निध्य में धर्मलाभ प्राप्त करते हुए किशनगढ़ में चातुर्मास संपन्न होने की मंगल कामना की। उपस्थित समाजजनों ने विश्वास व्यक्त किया कि आचार्य श्री के सान्निध्य में चातुर्मास होने से क्षेत्र में धर्म, संस्कार एवं आध्यात्मिक चेतना का व्यापक प्रसार होगा।

पर्यावरण के प्रति प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण

✍ सुनील सुधाकर शास्त्री ''द्रोणगिरि'', सागर

मनुष्य ने जब पहली बार पृथ्वी पर आँखें खोली होंगी, तब उसने स्वयं को प्रकृति की विराट गोद में पाया होगा। आकाश की अनंतता, पर्वतों की निस्तब्धता, नदियों की कलध्वनि, वृक्षों की हरित छाया और वायु के जीवनदायी स्पर्श ने उसके भीतर यह अनुभूति अवश्य जगाई होगी कि वह इस सृष्टि का स्वामी नहीं, अपितु उसका एक अत्यंत छोटा सहभागी मात्र है। भारतीय संस्कृति का समूचा आध्यात्मिक चिंतन इसी विनम्र अनुभूति से जन्म लेता है। यहाँ प्रकृति केवल भौतिक संसाधन नहीं रही, बल्कि संवेदना, श्रद्धा और सह-अस्तित्व की जीवंत अभिव्यक्ति रही है। आज जब पृथ्वी का हृदय प्रदूषण से आहत है, नदियाँ विषाक्त हो रही हैं, वनों का हरापन मशीनों के शोर में विलीन होता जा रहा है, वायु जीवनदायिनी के स्थान पर रोगवाहिनी बनती जा रही है और मनुष्य अपनी ही सभ्यता के धुएँ में भविष्य खोजने को विवश है, तब यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है कि क्या आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमने अपनी सांस्कृतिक दृष्टि खो दी है? क्या विकास के नाम पर हमने उस प्रकृति को ही नष्ट करना आरंभ कर दिया है, जिसके बिना हमारा अस्तित्व असंभव है? प्राचीन भारतीय संस्कृति का सबसे अद्भुत पक्ष यह रहा कि उसने प्रकृति को उपभोग का विषय नहीं, बल्कि उपासना का विषय बनाया। यही कारण है कि यहाँ पृथ्वी माता है, गंगा केवल नदी नहीं, बल्कि जीवनधारा है; वटवृक्ष केवल वनस्पति नहीं, बल्कि दीर्घायु चेतना का प्रतीक है; पर्वत देवत्व के प्रतीक हैं और अग्नि, वायु, जल तथा सूर्य तक पूजनीय माने गए हैं। यह दृष्टिकोण किसी अंधविश्वास का परिणाम नहीं था, बल्कि प्रकृति-संरक्षण का अत्यंत सूक्ष्म सांस्कृतिक विज्ञान था।

ऋग्वेद का उद्घोष

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''

अर्थात पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं – मानव और प्रकृति के बीच के उसी आत्मीय संबंध को व्यक्त करता है, जिसमें शोषण की नहीं, संरक्षण की भावना निहित है। कोई भी पुत्र अपनी माता का विनाश नहीं कर सकता। भारतीय मनीषा ने संभवतः बहुत पहले समझ लिया था कि जिन वस्तुओं के प्रति मनुष्य के भीतर श्रद्धा होगी, उनका विनाश वह सहज रूप से नहीं करेगा। इसलिए नदियों को देवी कहा गया, वृक्षों को देववृक्ष कहा गया, पशुओं को पूज्य माना गया और वनस्पतियों तक में जीवन का स्पंदन अनुभव किया गया। जैन दर्शन ने इस दृष्टि को और अधिक व्यापकता प्रदान की। उसने संसार के सूक्ष्मतम जीवन को भी अस्तित्व का सम्माननीय भाग माना। पृथ्वीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिक जीवों की अवधारणा केवल दार्शनिक प्रतीक नहीं थी, बल्कि जीवन के प्रत्येक रूप के प्रति संवेदनशीलता का अनुपम उदाहरण थी। जहाँ सामान्य दृष्टि केवल मिट्टी देखती है, वहाँ जैन दृष्टि असंख्य जीवों की उपस्थिति का अनुभव करती है। जहाँ मनुष्य केवल जल देखता है, वहाँ चेतना की सूक्ष्म तरंगों का संसार विद्यमान माना जाता है। यही कारण है कि अहिंसा केवल सामाजिक व्यवहार का सिद्धांत नहीं रही, बल्कि पर्यावरणीय अनुशासन का भी आधार बनी। भारतीय संस्कृति की ''कण-कण में भगवान'' की अवधारणा वस्तुतः पर्यावरणीय नैतिकता की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति है। यदि प्रत्येक कण में ईश्वर का अंश है, यदि प्रत्येक जीव में परमात्मा बनने की संभावना है, यदि प्रत्येक स्थान किसी न किसी तप, साधना या चेतना का स्पर्श पा चुका है, तब इस सृष्टि का कोई भी अंश तिरस्कार योग्य कैसे हो सकता है? तब वृक्ष काटना केवल लकड़ी काटना नहीं रह जाता, वह जीवन की संभावना पर प्रहार बन जाता है। नदी को प्रदूषित करना केवल जल को गंदा करना नहीं रह जाता, वह अस्तित्व की धारा को विषाक्त करना बन जाता है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि मनुष्य ने प्रकृति के साथ अपना संबंध खो दिया है। आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को सुविधाएँ तो दीं, किंतु संवेदनाएँ छीन लीं। मशीनों ने गति दी, परंतु मन की शांति हर ली। महानगरों की चमक ने तारों भरे आकाश को निगल लिया। विकास की अट्टालिकाओं ने वृक्षों की हरियाली को विस्थापित कर दिया। परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, ऋतुओं का संतुलन बिगड़ रहा है, जैव विविधता समाप्त हो रही है और मनुष्य स्वयं अपने अस्तित्व के संकट के सामने खड़ा है। आज आवश्यकता केवल पर्यावरणीय कानूनों की नहीं है; आवश्यकता पर्यावरणीय संस्कारों की है। कानून भय पैदा कर सकते हैं, किंतु संरक्षण का स्थायी भाव केवल संस्कृति ही उत्पन्न कर सकती है। यदि बचपन से ही मनुष्य को यह सिखाया जाए कि वृक्ष केवल ऑक्सीजन के स्रोत नहीं, बल्कि जीवन के सहचर हैं; नदियाँ केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि सभ्यता की धमनियाँ हैं; पृथ्वी केवल भूमि नहीं, बल्कि जीवनदायिनी माता है, तो पर्यावरण संरक्षण कोई सरकारी अभियान नहीं रहेगा, बल्कि जीवन का स्वाभाविक आचरण बन जाएगा। समाधान बाहरी व्यवस्थाओं से पहले भीतर की चेतना में परिवर्तन से आरंभ होगा। हमें पुनः उस सांस्कृतिक दृष्टि की ओर लौटना होगा, जहाँ प्रकृति के प्रति श्रद्धा थी। वृक्षारोपण केवल औपचारिक कार्यक्रम न रहे, बल्कि जीवन का उत्सव बने। जल संरक्षण केवल नारा न रहे, बल्कि सामाजिक अनुशासन बने। धार्मिक अनुष्ठानों को भी पर्यावरण-सम्मत स्वरूप दिया जाए। नदियों को श्रद्धा से पूजने के साथ-साथ उन्हें प्रदूषण से मुक्त रखना भी धार्मिक कर्तव्य माना जाए। नगरों के विस्तार के साथ-साथ हरित क्षेत्र अनिवार्य हों। विद्यालयों में पर्यावरण केवल विषय न रहे, बल्कि संस्कार बने। यह भी आवश्यक है कि हम उपभोग की अंधी संस्कृति से बाहर निकलें। प्रकृति की सबसे बड़ी शत्रु मनुष्य की अतृप्त इच्छाएँ हैं। भारतीय दर्शन का अपरिग्रह सिद्धांत आज के पर्यावरण संकट का अत्यंत प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। जितनी आवश्यकता हो उतना ही उपभोग, जितना चाहिए उतना ही संग्रह और जितना संभव हो उतना ही संरक्षण – यदि यह जीवनशैली बन जाए तो पृथ्वी पर पड़ने वाला असंतुलित दबाव स्वतः कम हो सकता है। विश्व पर्यावरण दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं होना चाहिए; यह आत्ममंथन का दिवस होना चाहिए। यह दिन हमें स्मरण कराए कि यदि पृथ्वी सुरक्षित नहीं रहेगी तो कोई भी प्रगति अर्थपूर्ण नहीं रह जाएगी। मानव सभ्यता का भविष्य तकनीकी चमत्कारों से अधिक प्रकृति के संतुलन पर निर्भर है। हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारे पूर्वजों की संपत्ति नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है, जिसे हमने केवल कुछ समय के लिए संरक्षण हेतु प्राप्त किया है। भारतीय संस्कृति की प्राचीन दृष्टि आज भी हमें यही सिखाती है कि प्रकृति पर अधिकार नहीं, उसके साथ सह-अस्तित्व ही मानवता का वास्तविक पथ है। जब मनुष्य पुनः यह अनुभव करने लगेगा कि वायु में जीवन का स्पर्श है, जल में चेतना की धारा है, वृक्षों में मौन करुणा है और पृथ्वी के प्रत्येक कण में दिव्यता का अंश विद्यमान है, तभी पर्यावरण संरक्षण केवल नीतियों का विषय नहीं रहेगा, बल्कि मानव हृदय की सहज संवेदना बन जाएगा और संभवतः उसी दिन यह पृथ्वी फिर से खुलकर साँस ले सकेगी।

पंचभूतों में समाहित, सृष्टि का नव गान है,
चहचहाते नभचरों में शांति का मधुर तान है।
नदी, पर्वत, वृक्ष, सागर, जीव सब सहचर हमारे,
समन्वित हो रहे सारे, आज यह धरती पुकारे।।